आज समाज

नई दिल्ली एवं अंबाला/चंडीगढ़, हिसार, पृष्ठ-12, शुक्रवार, 20 अप्रैल 2018, शक संवत 1939, वैशाख मास 07 प्रविष्टे, 03 शाबान हिजरी 1439, वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी, मूल्य 2.50 रुपए

आज समाज

www.aajsamaaj.com

दिल्ली/गुरुग्राम/फरीदाबाद/नोएडा

शक संवत 1939,

शिविर में 110 लोगों की आंखों की निशुल्क जांच

निशुल्क नेत्र जांच शिविर में भाग लेते लोग। आज समाज

आज समाज नेटवर्क

गुरुग्राम। सामाजिक दायित्व के प्रति निरंतर कृतिशील सुधा सोसायटी ने सेंटर फॉर साईट आई हॉस्पिटल के सहयोग से निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर साउथ सिटी ए-ब्लॉक में आयोजित किया गया। जिसमें बहुसंख्यक समाज ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। शिविर में डॉक्टरों द्वारा 110 से अधिक लोगों की आखों की जांच हुई की गई। साथ ही वंचित वर्ग के 40 से अधिक परिवारों को इस जांच शिविर का सीधा लाभ मिला एवं चिकित्सकीय परामर्श दिया गया। शिविर का शुभारंभ उपायुक्त अशोक यादव, बीएस चौहान ने किया। यहां डॉक्टर्स की टीम में डॉ. केया बर्मन के निर्देशन में कार्य किया।

आज समाज

नई दिल्ली एवं अंबाला/चंडीगढ़, हिसार, पृष्ठ-12, शुक्रवार, 20 अप्रैल 2018, शक संवत 1939, वैशाख मास 07 प्रविष्टे, 03 शाबान हिजरी 1439, वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी, मूल्य 2.50 रुपए

आज समाज

www.aajsamaaj.com

दिल्ली/गुरुग्राम/फरीदाबाद/नोएडा

शक संवत 1939,

शिविर में 110 लोगों की आंखों की निशुल्क जांच

निशुल्क नेत्र जांच शिविर में भाग लेते लोग। आज समाज

आज समाज नेटवर्क

गुरुग्राम। सामाजिक दायित्व के प्रति निरंतर कृतिशील सुधा सोसायटी ने सेंटर फॉर साईट आई हॉस्पिटल के सहयोग से निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर साउथ सिटी ए-ब्लॉक में आयोजित किया गया। जिसमें बहुसंख्यक समाज ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। शिविर में डॉक्टरों द्वारा 110 से अधिक लोगों की आखों की जांच हुई की गई। साथ ही वंचित वर्ग के 40 से अधिक परिवारों को इस जांच शिविर का सीधा लाभ मिला एवं चिकित्सकीय परामर्श दिया गया। शिविर का शुभारंभ उपायुक्त अशोक यादव, बीएस चौहान ने किया। यहां डॉक्टर्स की टीम में डॉ. केया बर्मन के निर्देशन में कार्य किया।

दैनिक जागरण

नई दिल्ली, मंगलवार 23 नवंबर 1999

रूडसेट के लिए फिक्की अवार्ड महत्वपूर्ण उपलब्धि : भटनागर

अनिल आर्य

गुड़गांव, 22 नवंबर। ग्रामीण विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए ग्रामीण विकास एवं रोजगार संस्थान(रूडसेट)को फिक्की अवार्ड 1998-99 से सम्मानित किए जाने को संस्थान की गुड़गांव शाखा के निदेशक जीके भटनागर ने महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया है। श्री भटनागर के अनुसार संस्थान ने बेरोजगारी की समस्या को हल करने में पहल की है।

विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रूडसेट को यह अवार्ड दिया। यह अवार्ड डी वीरेंद्र हेगड़े, धर्माधिकारी, धर्मस्थल, चेयरमैन सिंडिकेट तथा चेयरमैन केनरा बैंक तीनों ने संयुक्त रूप से ग्रहण किया।

रूडसेट गुड़गांव के निदेशक जी.के. भटनागर ने दैनिक जागरण को एक खास मुलाकात में बताया कि समारोह में रूडसेट परिवार के कार्यकारी निदेशक वी ए सालिमठ, गाजियाबाद के निदेशक एस के तिवारी, आगरा के कन्हैया सिंह, जयपुर के टी सी जैन, गुड़गांव के संयुक्त निदेशक ए के सिन्हा व गाजियाबाद के संयुक्त निदेशक मौजूद थे।

श्री भटनागर के अनुसार, रूडसेट संस्थान ग्रामीण विकास प्रवर्तन का संस्थागत ढांचा है। इसका मुख्य उद्देश्य स्वरोजगार, ग्रामीण परिवर्तन एजेंट प्रशिक्षण ग्रामीण क्षेत्र में पूंजी निर्माण, समुचित प्रौद्योगिकी आदि के अंतरण में सहायता करना है। संस्था को श्री धर्म स्थल शैक्षणिक ट्रस्ट, सिंडिकेट बैंक, केनरा बैंक, सिंडिकेट कृषि तथा ग्रामीण विकास फाउंडेशन तथा केनरा बैंक प्लेटिनम जुबली ग्रामीण विकास ट्रस्ट द्वारा संयुक्त रूप से प्रायोजित किया जाता है।

उन्होंने बताया कि सामूहिक चिंतन के फलस्वरूप 1982 में कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिले के छोटे से गांव उजीरे में रूडसेटी के रूप में एक संस्था का उदय हुआ। उजीरे में इस संस्थान की सफलता के बाद पूरे भारत में रूडसैटी की 17 यूनिटों को स्थापित किया जा चुका है। इनमें से 7 यूनिट कर्नाटक, 2 यूनिट आंध्रप्रदेश के वेटापलम तथा अनंतपुर में स्थित हैं। 2 यूनिट उत्तर प्रदेश, एक-एक यूनिट हरियाणा में गुड़गांव, राजस्थान में जयपुर, तमिलनाडू में मदुरै, केरला में कन्नापुरम, महाराष्ट्र में पुणे तथा उड़ीसा में भुवनेश्वर में स्थित है।

श्री भटनागर ने बताया कि रूडसैटी ने अब तक 2656 स्वरोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से 83078 बेरोजगार नवयुवकों को प्रशिक्षित किया है। इनमें से 95 प्रतिशत शहरी, अर्द्ध शहरी तथा मध्यम वर्ग से हैं। प्रशिक्षित कुल अभ्यर्थियों में 12858 अनुसूचित जाति, 3365 अनुसूचित जन जाति, 8644 अल्पवर्ग समुदाय से हैं। 18491 महिलाओं तथा 779 विकलांग युवकों को विशिष्ट कार्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया है। महिला प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान इस बात पर विशेष बल दिया जाता है कि वे घर की चारदीवारी से बाहर निकलें।

उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान अभ्यर्थियों की आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए उन्हें आवास तथा भोजन मुफ्त प्रदान किया जाता है। अब तक प्रशिक्षितों में से 53746 ने अपने ही गांव या शहर में स्वरोजगार परियोजना स्थापित कर ली है। इन सफल अभ्यर्थियों में से 23088 ने विभिन्न बैंकों से आर्थिक सहायता प्राप्त की है। जहां सिंडिकेट बैंक ने 18.76 करोड़ रुपये से 7675 अभ्यर्थियों को सहायता दी है, वहीं केनरा बैंक ने 13.71 करोड़ रुपये से 5821 अभ्यर्थियों को लाभ पहुंचाया है। अन्य बैंकों ने भी 36.33 करोड़ रुपये से 1929 अभ्यर्थियों को वित्तीय सहायता प्रदान की है।

श्री भटनागर के अनुसार केंद्र सरकार की

प्रधानमंत्री रोजगार योजना के अंतर्गत अब तक 8649 हिताधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया है। इनमें से कुछ अभ्यर्थी तो ऐसे थे जो मात्र प्रशिक्षण प्रमाण पत्र के उद्देश्य से आए। लेकिन रूडसेट में प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने प्रशिक्षण तथा स्वरोजगार के महत्व को समझकर प्रशिक्षण में अपना मन लगाया।

प्रारंभिक उद्यमियों के कार्यक्रमों के अतिरिक्त रूडसेटी ने रोजगार में लगे हुए उद्यमियों के लिए कार्यक्रम आयोजित करके अभ्यर्थियों को लाभान्वित किया है। रूडसेटी ने बैंक कर्मचारियों के लिए भी ग्रामीण विकास संबंधी विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं जिससे जिन्हें संभाव्य ग्रामीण उद्यम तथा ऋण मूल्यांकन की जानकारी में सुविधा हो। सेल्फ हेल्प ग्रुप तथा स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना जैसे कार्यक्रम सिंडिकेट बैंक, केनरा बैंक, कार्पोरेशन बैंक तथा कावेरी ग्रामीण बैंक के प्रबंधकों के लिए आयोजित किए गए हैं। रूडसेटी ने निर्वाचित प्रतिनिधियों तथा सरकारी कर्मचारियों के लिए व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों का आयोजन किया है जो सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

उन्होंने बताया कि ग्रामीण विकास तथा सामाजिक कल्याण में कार्यरत विभिन्न स्वैच्छिक संघ, व्यापार संघ तथा सेल्फ ग्रुप के आयोजकों तथा ग्रामीण स्तर के कामगारों के लिए विभिन्न 498 कार्यक्रमों का आयोजन करके 23739 अभ्यर्थियों को प्रशिक्षित किया गया।रूडसेटी का उद्यम जागरूकता संबंधी कार्यक्रम नवयुवकों में स्वरोजगार के प्रति रुझान पैदा करने तथा वैकल्पिक रोजगार की संभावनाओं का पता लगाने में कालेजों तथा स्वैच्छिक संघों, बैंकों आदि का सहायक रहा है। रूडसेटी प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण बिंदु प्रशिक्षण के पश्चात अभिप्रेरणा स्तर तक कार्रवाई करना तथा नए उद्यमियों की समस्याओं को दूर करना है। यह अन्य एजेंसियों के साथ स्वरोजगार उपक्रम को स्थापित करने में बैंकों, सरकारी विभागों आदि को पूर्ण सहयोग प्रदान करता है।

दैनिक जागरण

नई दिल्ली, बुधवार 29 दिसंबर 1999

मंगलवार को रूडसेट गुड़गांव के प्रशिक्षण कार्यक्रम का दीप जला कर उद्घाटन करते हुए एस पी गौड़ (खबर पृष्ठ 5 पर)। जागरण

रूडसेट का 247 वां प्रशिक्षण शिविर शुरू

मुख्य संवाददाता

गुड़गांव, 28 दिसंबर। 27 दिसंबर से शुरू हुए रूडसेट संस्थान का 247 वां प्रशिक्षण- प्रधानमंत्री रोजगार योजना-का शुभारंभ गुड़गांव ग्रामीण बैंक के चीफ इंसपेक्टर एवं विजिलेंस आफिसर एस पी गौड़ ने दीप प्रज्वलित कर किया। यह कार्यक्रम सिडबी के सहयोग से आयोजित जा रहा है।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम उन सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए जरूरी है जिनका प्रधानमंत्री रोजगार योजना के अंतर्गत बैंकों द्वारा ऋण के लिए स्वीकृत किए गए हैं। इस प्रशिक्षण का दायित्व जिला उद्योग केंद्र गुड़गांव ने रूडसेट संस्थान को सौंपा है।

संस्थान के निदेशक जीके भटनागर ने अतिथियों का स्वागत किया और संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने आगामी प्रशिक्षण कार्यक्रम की घोषणा की जो 24 जनवरी से स्कूटर एवं मोटर साइकिल की मरम्मत के लिए दिया जाएगा।

THE TIMES OF INDIA

TIMES Business Opportuniti

YOUR WIND

For the week June 14-20 , 2001

'We're planning initiatives to bridge digital divide'

***G.K. Bhatnagar, director, Rudset Institute,** a government initiative to provide free training to educated, unemployed youth, speaks to **Vinod Behl** about the institute's programmes.*

How successful has the Rudset experiment been?

Rudset, a joint venture of Canara Bank, Syndicate Bank and SDME Trust supported by SIDBI and NABARD, is one of its own kind of institute where free training (with boarding and lodging) is provided to the youth. All the 18 units of Rudset have successfully trained over one lakh youth for self-employment. Gurgaon unit which covers South and West Delhi, Faridabad, Gurgaon, Rewari, Mahendergarh, Panipat and Karnal areas of NCR alone has trained 7000 youth 95 per cent of whom are from rural, semi-urban and middle class background. Women and handicapped persons have also been given training by designing specific programmes for them. The success of our programmes can be judged from the fact that a record 65 per cent of the trainees have settled with their self-employment projects. The major achievement of Rudset is the high settlement rate with lowest per trainee cost of Rs. 144 for which it has received FICCI Award. Several entrepreneurs trained at Rudset have also received national awards.

•FACE OFF•

G.K. BHATNAGAR
Director, Rudset Institute

How are you motivating youth to take up these programmes?

Our philosophy is to promote self employment among first generation entrepreneurs by bringing technology training and credit within the reach of youth (18-35 years) with relatively low level of education and inadequate family and community support. We have involved faculty from big corporates like Hero Honda, Escorts, Whirlpool, Eicher, etc., for training purposes. We are motivating them by organising regular awareness programmes with NGOs. Recently we organised 16 programmes in Delhi and parts of NCR.

What kind of services Rudset is providing for established entrepreneurs?

We have skill up-gradation pro-

(Continued on page 2)

'We're planning initiatives to bridge digital divide'

(Continued from page 1)

rammes which are intended to ive additional/advanced skills o entrepreneurs in their choen field. Our training-cum-ounselling programme helps ntrepreneurs, who have eached break even level, to row systematically. Then our echnology transfer programmes in collaboration with esearch institutes and NGOs re launching pad for introducon of cost-efficient, environent-friendly technology by the ntrepreneurs.

Vhat're the new initiatives lanned by the institute?

Ve are planning a major initiaive to bridge the digital divide etween urban youth and the ural youth to promote enrepreneurship. For that, we're tarting an EDP on computer ardware.

कानपुर-लखनऊ-गोरखपुर-वाराणसी (इला.)-झांसी-मेरठ (देहरादून),
नयी दिल्ली

दैनिक जागरण

दैनिक जागरण, नई दिल्ली, 16 अप्रैल 2001

जागरण

बेरोजगारी दूर करने का एकमात्र विकल्प स्वरोजगार : भटनागर

गुड़गांव, 15 अप्रैल। बेरोजगारों को स्वरोजगार अपनाने के लिए प्रशिक्षण देकर अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद देने के लिए केनरा बैंक, सिंडिकेट बैंक और श्री धर्म स्थल मंजूनाथेश्वर के संयुक्त तत्वावधान में चलाए जा रहे रूरल डेवलपमेंट एंड सेल्फ डेवलपमेंट ट्रेनिंग संस्थान (रूडसेट) की अग्रणी भूमिका रही है। इस संस्थान में बेरोजगार युवक-युवतियों को स्वयं रोजगार का प्रशिक्षण देने के लिए विभिन्न प्रकार के नि:शुल्क प्रशिक्षण उपलब्ध कराए जाते है। केवल प्रशिक्षण ही नहीं, प्रशिक्षुओं के रहने और खाने-पीने की व्यवस्था भी संस्थान द्वारा मुफ्त उपलब्ध कराई जाती हैं। इस संस्थान का देश के अन्य संस्थानों के मुकाबले सेटलमेंट रेट सबसे अधिक 67 फीसदी है। यानी यहां प्रशिक्षण लेने वाले 67 फीसदी युवक-युवतियां प्रशिक्षण के बाद अपना रोजगार अपना लेते हैं। इस संस्थान में जो भी निदेशक बनकर आया उसने ही संस्थान के प्रशिक्षण कार्यों को नई बुलंदी तक पहुंचाने के प्रयास किए। संस्थान से जल्दी ही स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्ति ले रहे वर्तमान निदेशक जीके भटनागर ने इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को नए आयाम दिए। उन्होंने न केवल युवक-युवतियों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराया, बल्कि उन्हें धूम्रपान जैसी आदतों से छुटकारा पाने के लिए प्रेरित किया, योगासनों द्वारा उनका मनोबल बढ़ाया तथा आर्ट आफ लीविंग जैसे प्रशिक्षण मुफ्त उपलब्ध कराए। दैनिक जागरण द्वारा शुरू किए गए नियमित कालम 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' के लिए उन्होंने विशेष रूप से सहयोग दिया। इस कालम की अंतिम किश्त में हमने रूडसेट संस्थान की गतिविधियों के बारे में बातचीत की। प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंश-

आपने कब रूडसेट के निदेशक पद की जिम्मेदारी संभाली?

7 जून, 1999 को। इससे पहले सिंडिकेट बैंक में सीनियर ब्रांच मैनेजर था। वहीं से प्रति नियुक्ति पर यहां आया। दरअसल इस संस्थान का निदेशक केनरा बैंक अथवा सिंडिकेट बैंक के किसी अधिकारी को बनाया जाता है। इस संस्थान का संचालन इन दोनों बैंकों और श्री धर्म स्थल मंजूनाथेश्वर द्वारा संयुक्त रूप से किया जाता है।

जी. के. भटनागर

रूडसेट की शाखा क्या केवल गुड़गांव में ही है?

नहीं, देश भर में इसकी 18 शाखाएं हैं। इस शाखा के साथ हरियाणा के गुड़गांव के अलावा फरीदाबाद, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, पानीपत और करनाल जिले के अलावा दिल्ली के पश्चिमी व दक्षिणी दिल्ली के जिले जुड़े हैं और इन्हीं जिलों के युवक युवतियों को यहां प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाता है।

यहां किस किस प्रकार रोजगार का प्रशिक्षण बेरोजगारों को दिया जाता है?

बहुत से कार्यक्रम हैं। इनके लिए कोई भी पढ़ा-लिखा बेरोजगार संस्थान आकर जानकारी ले सकता है। मुख्य रूप से यहां युवकों के लिए मोटर वाइंडिंग, एयरकंडीशनर व फ्रिज रिपेयरिंग, मोटर साइकिल, स्कूटर मरम्मत, फोटो-वीडियो, पशुपालन, टीवी रिपेयर, जनरेटर रिपेयर, स्क्रीन प्रिंटिंग तथा लड़कियों के लिए ब्यूटी पार्लर व कटिंग टेलरिंग का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अलावा उद्यमिता विकास तथा दक्षता विकास के प्रशिक्षण समय-समय पर दिए जाते रहते हैं।

आपके कार्यकाल में अब तक कुल कितने प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए?

अब तक कुल 32 कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें करीब एक हजार युवक-युवतियों को प्रशिक्षण दिया गया। इनमें मोटर वाइंडिंग के चार, एयरकंडीशनर व फ्रिज मरम्मत के दो, ब्यूटी पार्लर, कटिंग टेलरिंग, मोटर साइकिल- स्कूटर मरम्मत, फोटो वीडियो तथा पशुपालन के दो-दो, टीवी रिपेयर व स्क्रीन प्रिंटिंग के तीन-तीन, उद्यमिता विकास के नौ तथा जनरेटर मरम्मत का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनके अलावा दक्षता विकास के भी तीन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

संस्थान में प्रशिक्षण के लिए शैक्षिक पात्रता क्या है?

कोई भी पढ़ा-लिखा बेरोजगार इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल हो सकता है तो भी मिडिल पास तो होना ही चाहिए।

क्या सभी बेरोजगारों को यहां दाखिला मिल जाता है?

सभी को दाखिला दिया जाना कई बार संभव नहीं हो पाता है। अधिक उम्मीदवार होने पर चयन के लिए साक्षात्कार लिया जाता है।

क्या सभी प्रशिक्षित बेरोजगार अपना रोजगार अपना लेते हैं?

सभी तो नहीं, सेटलमेंट रेट 67 फीसदी है, फिर भी हम दो वर्ष तक फॉलोअप कर शेष को भी अपना कारोबार शुरू करने के लिए प्रेरित करते हैं।

फॉलोअप कैसे करते हैं?

प्रशिक्षण लेकर जाने वाले प्रत्येक प्रशिक्षु से पत्र व्यवहार द्वारा निरंतर संपर्क रखा जाता है और प्रशिक्षण लेने के दो वर्ष तक उनसे पत्र व्यवहार जारी रहता है। इसके अतिरिक्त जिला स्तर पर उनसे बैठकें आयोजित कर व्यक्तिगत संवाद भी कायम किया जाता है।

क्या इससे पहले भी संस्थान की किसी अन्य शाखा में काम किया है?

नहीं, पहली बार यहीं आया। इससे पहले सिंडिकेट बैंक में ही विभिन्न स्तर पर काम किया।

बैंक के काम और यहां के काम में क्या अंतर पाया?

बहुत है, यहां काम करने और अपने निर्णय खुद लेने की आजादी है। अपने प्रयासों के अनुरूप काम करने से संतुष्टि भी अधिक मिलती है।

सुना है आप स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले रहे हैं?

ठीक ही सुना है, स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का आवेदन स्वीकार भी हो गया है। शायद इस महीने के अंत तक पदमुक्त भी हो जाऊंगा।

भविष्य के लिए क्या योजना है?

अभी तय नहीं किया है। पर किसी स्वैच्छिक संस्था (एनजीओ) से जुड़ कर काम करने की या अपना ही एनजीओ गठित कर इसी प्रकार का कोई सेवा कार्य करने की सोच रहा हूं।

पढ़े-लिखे बेरोजगार युवाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

वही, जो रूडसेट की नीति है। काम सीखो, हुनरमंद बनो और अपना रोजगार शुरू कर अपने पैरों पर खड़े हो जाओ। अपनी ओर से मैं यही कहना चाहूंगा कि नौकरी मिलना आसान नहीं है। अपना रोजगार अपनाना बेरोजगारी दूर करने का सबसे अच्छा विकल्प है।

प्रस्तुति : सुखबीर चौहान

ourses) programmes, with a small number choosing to follow general higher education. Only when the kind of knowledge cultivated here is increased and redistributed can India emerge as a nation to reckon with.

Presently, 24 million people enter the education system every year, but only 1.6 million study further. The options available to them are usually in the fields of Commerce, Arts, Science, Law, Engineering, Medical and Management. The balance 23.4 million need vocational education and training (VET) and entrepreneurship skill development (ESD).

India in the 60th year of Independence

India is a very young nation. 55% of Indians, i.e., 595 million people are below 30 years of age and 70% of Indians, i.e. 770 million people are below 35 years of age. But are there enough opportunities for employment and work for these young people?

Vocational Education and Training

Advantage India

Imparting vocational education and training would benefit all and also have the following advantages.

(1) Prepare the youth for a vocation of their choice;

(2) Build up a formidable work force of international quality, which would be in demand not only in India but also in all other countries. In India, only IT training is world class. VET has and will continue to transform India in the future. In the manufacturing and service sector, there are hundreds of skills and vocations for which there is worldwide shortage. Examples abound in the spheres of TV, electrical appliance repair and service, automobile repair and services, foreign language skills, medical and health services, nursing.

(3) We need millions of trained people in agriculture, floriculture, horticulture, sericulture, fishery, healthcare, tourism, etc., as also the manufacturing sector. However, we do not see world class vocational training infrastructure, even after 60 years of India's Independence.

(4) Reduce unemployment by supplying world-class skilled people.

(5) Reduce cost and improve the productivity of services and manufacturing by providing skilled manpower to international standards. Run the country with a higher efficiency, lesser wastage and lower cost of operation.

Wastage of Scarce Resources

The scramble to study for 10+2, B.A. B.Com. or B.Sc. is a waste of time. In India, the mad rush for college and university education is a disaster for all concerned. It seems we are preparing the youth to become 'Dignified Babus'. What we require instead are 'Skilled Professionals' and an entire spectrum of them.

What is the relevance of B.A. or B.Sc. or even a M.A. or M.Sc. degree in today's complex economy? Probably very little. Hardly 5% of India's population requires such qualifications at this stage. Moreover, the faculty and infrastructure are not able to cope with the increasing number of students. People who learn a skill or competence or trade have the opportunity for upward mobility, during their lifetime, as per their needs. The reverse may not be true. The present college system does not prepare the youth with the skill set required to run a nation; nor does it provide scope for employment or enterprise. A total 97% of the new employment is in the Small and Medium Enterprise (SME) sector. Out of a work force of 430 million people, nearly 94% work is in the unorganized sector. The greatest advantage to the Indian industry will be if our SMEs and unorganized sectors get highly trained and educated manpower, resulting in reduced cost and improved quality. The organized sector needs a similar makeover.

Advantage of ESD (Entrepreneurship Skill Development)

An enterprising person is one who recognizes his own potential vis-à-vis the resources. S/he, with an original approach, adds value to the resources to convert them into products or services, for a profitable economic exchange.

Enterprising persons are required in all walks of society. Enterprise skill development is vital because:

(1) Enterprising people are an asset to the nation;

(2) Through enterprise education, students and youth will develop alternate options of economic careers;

(3) Enterprise education will enhance one's personality; and

(4) Enterprise education would give the youth a positive outlook in life as also a positive belief in themselves.

If the above suggestions are considered, we can get internationally certified carpenters, car mechanics, retailers, export-import assistants, wholesalers, masons, electricians, gardeners, beauticians and the like and India could transform itself from an economy burdened with unemployment to an employment generator. ❑

GK Bhatnagar
trainings@devalt.org

Colonelspeak

P P P P

Professionals are Prisoners of Power Point